

22

ISSN : 0976-5778

वर्ष : 2018-19

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के धर्म-आध्यात्म और पर्यटन पर केन्द्रित



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-22

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

अंक - 22, वर्ष - 2019 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी (कुलपति)

कर्नल आर.एम. जोशी (कुल सचिव)

प्रधान संपादक

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

संपादक

राजेन्द्र यादव

(सचिव, बुन्देली पीठ)

सहायक संपादक

विवेकानंद उपाध्याय

मनीष कुमार

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (म.प्र.)

ईसुरी-22

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2019 अंक - 22 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी
कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्मल आर.एम. जोशी
कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक

प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता

प्रो. निवेदिता मैत्रा
प्रो. चंदा बेन

प्रधान संपादक

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

संपादक

डॉ. राजेन्द्र यादव
(सचिव, बुन्देली पीठ)

सहायक संपादक

विवेकानंद उपाध्याय, मनीष कुमार

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र

आवरण छाया : डॉ. मशकूर अहमद

प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संपादक मण्डल

डॉ. हिमांशु कुमार
डॉ. अरविन्द कुमार
डॉ. अफरोज बेगम
डॉ. सत्य प्रकाश उपाध्याय
श्री सतीष कुमार
श्री विवेक विसारिया

भाग - दो : जैन धर्म की प्राचीन विरासत और बुन्देलखण्ड

1. बुन्देलखण्ड के प्राचीन जैन तीर्थ	- पद्मश्री कैलाश मड़वैया	93
2. जैन तीर्थ अहार जी	- अभिनन्दन गोइल	101
3. बुन्देलखण्ड में जैन तीर्थों की शृंखला	- डॉ. वारेलाल जैन	104
4. नैनागिर की जैन आस्था	- गोविन्द सिंह दांगी	110
5. कुण्डलपुर की प्राचीनता	- मनीष कुमार जैन	114
6. सोनागिर : जैन धर्म का प्राचीन स्थल	- आकांक्षा रावत	116
7. पपौरा : जैन आस्था का प्रतीक	- अभिनन्दन गोइल	119

भाग - तीन : चिराग-ए-आलम : सूफियाना बुन्देलखण्ड

1. धामोनी शरीफ : अनोखी दरगाह	- डॉ. मशकूर अहमद	123
2. पीलीकोठी वाले बाबा : सागर की रूहानी पहचान	- डॉ. अफ़रोज बेगम	126
3. संत अब्दाल पीर साहब : जतारा	- हरिविष्णु अवस्थी	130
4. दतिया जिले की प्रमुख दरगाहें	- डॉ. कामिनी सेंवडा	135
5. बुन्देलखण्ड की सूफी परम्परा	- डॉ. मशकूर अहमद	138
6. हजरत इलाही शाह बाबा : टीकमगढ़	- राजीव नामदेव	150

भाग - चार : आध्यात्मिक बुन्देलखण्ड

1. सनकादिमुनि का स्थान एवं महत्व	- डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव	152
2. बुन्देलखण्ड में सिद्धों की परम्परा	- गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त	161
3. संत जूड़ श्राइन झाँसी	- फादर वी.जे. थोमस	166
4. माँ हरसिद्धि देवी : रानगिर	- प्रो. चंदा बैन	168
5. तारणपंथ की भूमि : बुन्देलखण्ड	- नलिन जैन	173
6. रावतपुरा धाम : एक आध्यात्मिक तीर्थ	- डॉ. राजेन्द्र यादव	174
7. पीताम्बरापीठ दतिया : एक परिचय	- सौरभ सिंह	177
8. सांची के विश्व प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप	- कपिल कुमार गौतम	180
9. कबीर साहेब आश्रम : सागर	- अवधेश कुमार	183
10. मैहर की शारदा भवानी	- डॉ. ओमप्रकाश चौबे	187
11. रतनगढ़ की देवी	- डॉ. मुन्नीलाल शर्मा	191
12. बुन्देलखण्ड में प्रणामी सम्प्रदाय	- शिवराम मौर्य	194
13. माँ विन्ध्यवासिनी : बल्लेवगढ़	- डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी	198

माँ हरसिद्धि देवी : रानगिर

प्रो. चंदा बैन*

विंध्याचन पर्वत श्रृंखला की गोद में कल-कल निनादनी देहार नदी के तट पर मराठा कालीन यह सांस्कृतिक विरासत ऐतिहासिक धार्मिक केन्द्रों से संबद्ध जन-आस्था का एक प्रमुख केन्द्र है। यह छत्रसाल बुन्देला और धामोनी के मुगल फौजदार खालिक के बीच हुए युद्ध का स्थल रहा है।¹ इस स्थान के संबंध में प्रसिद्ध है कि यह देवी के जागृत प्रसिद्ध पीठों में से एक है।² यह स्थल रहली नगर से पश्चिम दिशा में रहली-सागर मार्ग पर लगभग 8 कि.मी. मार्ग संगम से दक्षिण दिशा में लगभग 15 कि.मी. की दूरी पर है। दूसरा मार्ग सागर-देवरी मार्ग है, जहां 37 वें कि.मी. से आठ कि.मी. अंदर वन क्षेत्र में रानगिर स्थित है। प्राकृतिक दृष्टि से देखा जाये तो यह स्थल सागर-रहली-देवरी की त्रिकोणीय संरचना का मध्य बिन्दु है।³ 1732 में सागर प्रदेश पर मराठों की सत्ता स्थापित थी। रानगिर परगना मराठों की राजधानी थी। जहां पंडित गोविन्दराव का शासन था जिन्हें पेशवाओं ने नियुक्त किया था। 1760 में गोविन्दराव की मृत्यु हो गयी और यह स्थल खण्डहर में तब्दील हो गया। इसी खण्डहर के बीचों-बीच एक चबूतरा था जिस पर रानगिर की हरसिद्धि देवी की मूर्ति जो नीचे आज के मंदिर से पश्चिम की ओर रखी थी, उसे श्रद्धालुओं ने सुरक्षा की दृष्टि से चबूतरे पर प्रतिष्ठित कर दी। कालान्तर में यहां

श्रद्धालुओं ने एक विशाल मंदिर का निर्माण कर दिया। इस मंदिर का निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व हुआ होगा।⁴ इस स्थान के संबंध में कोई शिलालेख उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इतना अवश्य है कि इस मंदिर की रचना मराठों की राजधानी रानगिर से सागर हस्तांतरित होने के बाद ही की गई होगी।⁵

हरसिद्धि देवी की प्रतिमा प्राचीन है। प्रतिमा के साथ एक छोटी मूर्ति भी बनी हुई है जो किसी सेवक के लिए इंगित करती है। मंदिर देहार नदी के तट पर एक बड़े परकोटे के भीतर 190X90 फुट लगभग (बीचों-बीच) वर्गाकार स्थित है। भीतर मंदिर में मात्र एक गर्भगृह तथा चारों ओर दीवाल बनवाई गई है। मंदिर के शिखर पर आकार गुम्बदनुमा है, जिसमें चतुर्दिक छोटे-छोटे लघु प्रकोष्ठ बने हुए हैं। शैली की दृष्टि से यह मध्यकालीन मिश्रित शैली (हिन्दू तथा मुगल शैली) में निर्मित है। हरसिद्धि भावार्थ में पार्वती देवी ही हैं। ऐसा माना जाता है कि पूर्वकाल में इस स्थान पर आने से भक्तों, दर्शनार्थियों की हर इच्छा की पूर्ति होती रही है, इस कारण इस देवी स्थान को हरसिद्धि कहा जाता है।⁶ रानगिर की हरसिद्धि देवी के प्रति पूरे बुन्देलखण्ड के लोगों की अपार श्रद्धा है। वर्ष में कुँआर एवं चैत्र की नवरात्रि की दुर्गा पूजा के समय यहाँ विशाल मेला लगता है।

*अध्यक्ष- भाषा विज्ञान विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

नवरात्रि के अवसर पर रानगिर की हरसिद्धी माँ के दर्शन करने क्षेत्र भर से हजारों भक्त नंगे पाँव पैदल चलकर यहाँ आते हैं। यह एक सिद्ध क्षेत्र है। बुन्देली की देवी भक्तों में इस स्थान की महिमा का चित्रण मिलता है।

माई सब पै किरपा राखियो हो मां -

1. कहना रहे कोयलियारे कहना दोई मोर
कहना रहे जालपा, कहाँ जुगलकिशोर
2. अमुवा रहे कोयलिया रे, वन में दोई मोर
मड़ में रहें जालपा, रन जुगलकिशोर
3. काहा खावै कोयलिया रे, काहा दोई मोर
काहा लैवें जालपा, को जुगलकिशोर
4. अमुवा खाने कोयलिया रे, कंकड दोई मोर
नरियल लैवें जालपा, सोई जुगलकिशोर
5. कैसैं आवे कोयलिया रे, कैसैं दोई मोर
कैसैं आवे जालप, कैसे जुगल किशोर
6. कुहकत आवै कोयलिया रे, नाचत दोई मोर
किलकत आवैं जालपा, सोई जुगलकिशोर
7. सुमर-समुर माई तोरे जस गावैं, जै बोलो हिंगलाज
माई सबपै किरपा राखियो हो मां-2

अर्थ :- बुन्देली गीतों में लोकहित की भावना कूट-कूट कर भरी है उक्त भगत का भी इसी तरह की भावना से ओतप्रोत आशय है। हे मां जगत जननी आप समस्त जीवों पर अपनी कृपा बनायें। कोयल कहाँ रहती है, मोर कहाँ रहता है? माता का निवास कहाँ है तथा जुगलकिशोर कृष्ण कहाँ रहते हैं? कोयल आम पर, मोर जंगल में, मंदिर में माता तथा रण क्षेत्र में कृष्ण रहते हैं। कोयल क्या खाती है, मोर क्या खाता है, माँ को कौन सी चीज प्रिय है तथा कृष्ण को क्या भाता है? कोयल कैसे आयेगी, मोर कैसे आयेंगे, माता जगतजननी तथा कृष्ण कैसे आयेंगे? कोयल कुह-कुह बोलकर, मोर नाचते हुए, माता तथा कृष्ण किलकारी मारकर आयेंगे। हे हिंगलाज पर निवास करने वाली मां... हम भक्त आपके चरित्रों का गुणगान करते हैं। हम पर आप अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें।

ज्ञात जानकारी के अनुसार सन् 1939 ई. तक यहां बलि प्रथा हिंसात्मक धार्मिक क्रियाकाण्डों व आडम्बरों का प्रचलन था। माता हरसिद्धी को प्रसन्न करने के लिए स्थानीय व बाहर से आने वाले अंध विश्वासी किंकर्तव्यविमूढ़ श्रद्धालु मूक जीव-जन्तुओं विशेषकर बकरों एवं अन्य जीव जन्तुओं की बलि दी जाती थी। निश्चित रूप से यह दिग्भ्रमित-अधार्मिक प्रथा का प्रचलन था। लेकिन इस प्रथा पर सन् 1936 ई. में कानूनी प्रतिबंध लगा दिया गया था। यह पुण्य कार्य हिन्दू महासभा के प्रचारक रामचन्द्र जी शर्मा ने किया था। शर्मा जी की पुस्तक “विकट यात्रा” में इस स्थान व यहां की घटनाओं का उल्लेख मिलता है। बुन्देली लोक के गीतों में माँ हरसिद्धी के प्रतिदिन बदलते तीन रूपों के साथ उनकी महिमा का गायन श्रद्धापूर्वक किया जाता है। जैसे बुन्देली ‘जस’ में -

चले पवन के साथ बगीचा, उड़ चले हो मां.....
कहना लगा दर्ई मैया बेला चमेली,
कहना लगाइये गुलदार बगीचा.....
बागों, लगादयी मैया बेना चमेली,
अंगना लगा दये गुलदार बगीचा.....
काहे कें सींची मैया बेला चमेली,
काहे कें सीचों गुलदार बगीचा उड़ चले.....
अमृत सींचो मैया बेला चमेली,
अमृत से गुलदार बगीचा उड़ चले.....
काहे से गोड़ी मैया बेला रे चमेली,
काहे से गुलदार बगीचा उड़ चले.....
खुरपन गोड़ी मैया बेला रे चमेली,
ओई सें गुलदार बगीचा उड़ चले.....
कौना ने टोरी मैया बेला रे चमेली,
कौना ने गुलदार बगीचा उड़ चले.....
देवी ने टोरी मैया बेला रे चमेली,
लंगड़े ने गुलदार बगीचा उड़ चले.....
कौना चढ़ाऊं मैया बेला रे चमेली,
कौना चढ़ा दऊं गुलदार बगीचा उड़ चले.....
देवी चढ़ा दऊं मैया बेला रे चमेली,

लंगड़े चढ़ा दऊं गुलदार बगीचा उड़ चले.....

सुमर-सुमर माई तोरे जस गाऊं,

जै बोलो हिंलाज, बगीचा उड़ चले हो माँ.....

अर्थ :- हवा के झोंके के साथ बगीचे के पौधे झूम रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि वे पेड़-पौधे हवा के साथ उड़ रहे हों। बेला चमेली गुलदार कहाँ लगाये गये? बेला चमेली बगीचों में लगायी गयी तथा गुलदार आंगन में लगा है। इन समस्त पौधों को काहे से सींचा जाता है? बेला चमेली को अमृत से सींचा जाता है गुलदार में अमृत सींचा जाता है। बेला चमेली को कैसे गोड़ा गया, किसने बेला चमेली तथा किसने गुलदार तोड़े? देवी ने बेला चमेली तथा लंगड़े ने गुलदार तोड़े। बेला चमेली तथा गुलदार किन्हें चढ़ावेंगे? देवी को बेला चमेली तथा लंगड़े को गुलदार चढ़ावेंगे। हे हिंलाज वाली माँ हम आपके गुणगान करते हैं, आपकी जय हो।

माँ हरसिद्धी की लीला अपरम्पार है। भक्तगण माता के दर्शन विभिन्न पहरों में विभिन्न रूप में करते हैं। सूर्य की प्रथम रश्मियों में उनकी मुद्रा बाल सुलभ किशोरी के रूप में देखी जा सकती है। दोपहर के पश्चात् युवा रूप में माँ के दर्शन होते हैं तथा संध्या बेला में वे वृद्धा रूप में दृश्यमान होती हैं। माता की इस परिवर्तनशील छवि में श्रद्धालु अपनी समूची आस्था और श्रद्धा माँ के चरणों में समर्पित कर धन्य हैं।⁸

रानगिर वनाच्छादित क्षेत्र है। वन्य जीव, कठोर चट्टानें, शिलायें, पहाड़ी, दुर्गम रास्ते तथा देहार नदी यहां की पहचान है। वन्य जीवों की बहुलता एक समय यहां इतनी अधिक थी कि अंग्रेज व विभिन्न समकालीन शासक यहां शिकार करने के लिए आते थे। आयुर्वेदाचार्य केशरीआर्य ने अपनी कृति - 'रानगिर का इतिहास' में लिखा है कि कभी शेर दिल वाले शिकारी रानगिर शिकार पर आते तो धरती पर दहाड़ते हुए बाघों को मार गिराते थे।

रानगिर ग्राम के नाम के संबंध में अनेक किवंदतियां प्रचलित हैं। प्रचलन के अनुसार इसे रावण की तपोभूमि माना जाता है। अर्थात् इस रावणगिरी से

अपभ्रंश स्वरूप रानगिर होने प्रमाण मिले हैं। यह आख्यान भी प्रचलित है कि भगवान रामचन्द्र जी वनवास के दौरान देहार के सरिता तट पर विश्राम किये होंगे। समीप में एक ग्राम रामग्रढ़ अभी भी रामगिरी एवं बाद में अपभ्रंश स्वरूप रानगिर होना भी संभव है। परन्तु उपरोक्त से पृथक ऐतिहासिक दृष्टि से रानगिर कभी रणगिरि के नाम से जाना जाता था। जैसा कि रणगिरि शब्द से तात्पर्य है युद्ध स्थल से है जिसके संबंध में अनेक ग्रंथ विश्वसनीय जानकारी देते हैं। छत्र प्रकाश रहली रहस्य और बुन्देलखण्ड महाराजा छत्रसाल आदि सभी ग्रंथ इसकी पुष्टि करते हैं। धामोनी के शासक खालिक ने महाराज छत्रसाल के सागर जिले में बढते हुए प्रभाव को रोकने के लिए रानगिर को युद्ध के स्थल के रूप में चुना। दोनों ओर से भयंकर युद्ध के पश्चात् विजय श्री छत्रसाल के हाथ आयी। अतः रणगिरि से रानगिर एक ऐतिहासिक नाम है।

रानगिर बस्ती मंदिर के पूर्व दिशा में है। ग्राम के पास ही देहार के तटीय स्थल पर रानगिर मंदिर के दक्षिणी तट पर एक गुफा मंदिर का निर्माण सन् 1965 में एक साधु के द्वारा कराया गया है। गुफा मंदिर के नीचे देहार नदी के तट पर एक प्राकृतिक झरना है। झरना वर्ष भर शुद्ध, शीतल जल ग्राम वासियों और दर्शनार्थियों को प्रदान करता है। पास ही एक शिवलिंग का देवालय भी है। ग्राम से दक्षिण की ओर देहार के उत्तंड तटीय पठार पर ब्रिटिश शासनकाल का एक सुन्दर विश्राम भवन बना हुआ है। विश्राम भवन सागर वन मंडल विभाग के संरक्षण में है।

हरसिद्धी माँ के मंदिर के पूर्व की ओर एक पुरातन जलाशय भी है जो किसी काल में शायद रानगिर राजधानी के समय में निर्मित हुआ होगा।

सरिता तट से पूर्वी ओर देवी जी के परकोटा से नीचे अनुमानतः 12वीं-16वीं सदी निर्मित 12 सतियों के प्राचीन चबूतरों के अवशेष मिलते हैं।

घाट के पास ही देहार नदी में वह गहरा जलकुण्ड है, जहां के संबंध में जनता में यह अनुश्रुति

कही जाती है कि उसमें लगभग 11 वीं सदी में कीर्तिमान के आक्रमण के अवसर पर एक चंदौरी के राजा अजपा नामक लुहार ने पीछा करते हुए सेना के लोगों से अपनी रक्षार्थ 'पारसमणि' जल में फेंकी थी। तभी से स्थानीय लोग उसे पारस कुण्ड कहने लगे। वह अजपा रानगिर का लुहार गोपनीय क्रिया और पारसमणि से लोहे से सोना बनाया करता था। मंदिर के पीछे पारस कुण्ड बहुत गहरा स्थल है।

मन्दिर विन्ध्यास देहार नदी के तट पर एक बड़े परकोटे के भीतर लगभग 190x90 वर्ग फुट लगभग बीचों-बीच वर्गाकार स्थित है। वर्तमान में मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है जिसमें चारों ओर बड़ी-बड़ी दालानों का निर्माण किया गया है तथा मंदिर के सामने स्थित भगवान शिव के मंदिर को दक्षिणी कोने में स्थापित किया गया है जिसमें परकोटे में अब काफी जगह हो गई है। मंदिर के भीतर मात्र गर्भगृह तथा चारों ओर नया दालान बनाया गया है। गर्भगृह के भीतर एक पुरानी लघुकाय मढ़िया सबसे पहले बनी थी। बाद में उसके ऊपर शिखर तथा चारों ओर दीवाल बनवायी गई। मंदिर ईंटों तथा चूने से निर्मित है। शिखर का आकार गुम्बदनुमा है जिसमें चतुर्दिक छोटे-छोटे प्रकोष्ठ बने हैं। यह मंदिर मध्यकालीन हिन्दू-मुस्लिम शैली में निर्मित हैं।

गर्भगृह -

गर्भगृह के भीतर लघुमढ़िया में हरसिद्धी देवी की स्थानक द्विभुजी प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमा प्रस्तर से स्थानीय शैली के अनुरूप निर्मित है। गर्भगृह का प्रवेश द्वार दक्षिण दिशा में और निकास पश्चिम में है। इस प्रकार रानगिर एक समूह का नाम है। जिसमें गौरदांत मंदिर, बूढ़ी रानगिर मंदिर तथा रानगिर मंदिर (हरसिद्धी माँ) अवस्थित हैं। उपरोक्त में माँ हरसिद्धी मंदिर का वर्णन तो ऊपर किया जा चुका है।

गौरीदांत मंदिर -

रानगिर की विन्ध्य पर्वत श्रेणियों में एक और सुरम्य स्थल गौरीदांत के नाम से प्रसिद्ध है। यद्यपि यह

क्षेत्र अत्यन्त प्राचीन हैं ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से भी इसका वर्णन आवश्यक है। मानचित्र पर कर्क रेखा के मध्य समीप ही विन्ध्याचल पर्वत के अंग भाग पर जो सागर जिले के बीच पड़ता है। यह दौरीदांत नामक अति प्राचीन गौरी कुमारिया क्षेत्र है। पुरातन साहित्य में भी विन्ध्याचल के मध्य भाग को गौरी कुमारी क्षेत्र कहा जाता है।

यह अनुष्ठान कार्यों में उच्चारित एक मंत्र -

जम्मू दीपेआर्यान्तर्गते दशार्णव दशो गौरी 'कुमारिका'।

क्षेत्रे च रेवार्या उत्तर तीरे कालिधः दक्षिणे तीरेनीं।

नया देहारे उत्तर तीरे प्राच्य गौरीदन्तः प्रकीर्तितः।।

इस श्लोक से स्पष्ट है कि सागर जिले में देहार नदी के तट पर स्थित गौरी कुमारिका का क्षेत्र स्थित है।

रानगिर के विशाल वनक्षेत्र के अंतर्गत देहार नदी के उत्तरी पर्वतीय पठार पर गौरी दांत नामक पर्वत है। चार पर्वतों के मध्य में कर्क रेखा के साथ ही, विशाल गर्भान्त लगभग 2000 फुट की ऊँचाई आने वाला गौरी कुमारी या गौरी दंत शक्ति पीठ बन गया।

यह शक्तिपीठ प्राकृतिक संरचना जो संभवतः सृष्टि के रचनाकाल से इसी प्रकार निर्मित थी। जैसे आज पर्वत का वह भाग दृष्टिगोचर होता है। पर्वत का पश्चिमी भाग ऊँची शिलाओं से निर्मित यह आभास कराता है जैसे कोई स्त्री उर्धावावस्था में पृथ्वी पर शयन कर रही हो और उसके ललाट पर नीचे मुंह से उसके दांत प्रदर्शित हो रहे हैं। पूर्वी भाग नीचा है जो नारी शरीर का बोध कराता है। वृक्षों से आच्छादित पर्वत भाग मानवीय रूप जैसा शोभित होता है। एक अन्य कथा के अनुसार जब सती ने दक्ष यज्ञ में अपने शरीर को जला दिया तब भगवान शिव सती के शरीर को लेकर ताण्डव नृत्य करते हुए घूम रहे थे। उस समय सती के शरीर के विभिन्न अंग जिन-जिन स्थानों पर गिरे थे, सभी स्थान शक्तिपीठ के रूप में स्थापित हो गये। मनीषियों के अनुसार गौरी के दांत इसी विन्ध्य पर्वत के इस भाग गिरे। अतः यह गौरी कुमारिका भू-भाग अपनी प्राकृतिक संरचना से भी इसे सत्य प्रमाणित करता प्रतीत होता है।

गौरी दांत पर्वत के नीचे पार्श्वीय प्रांगण में विशाल शिलाओं से निर्मित एक गुफा क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में फैली शिलाओं पर प्राचीन मानव द्वारा बनाये गये सैकड़ों कलात्मक शैलचित्र दृश्य हैं। यह चित्र जिनमें अधिकांशतया लाल रंग का प्रयोग किया गया है, अतीत की मौन स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। वनवासी मानवों ने अपने कला कौशल से उर्ध्व छतों पर जंगली पशु-पक्षियों के रेखाचित्र बनाये हैं। मानव की विविध क्रीड़ाओं का चित्रांकन तत्कालीन ऐतिहासिक परिदृश्य स्पष्ट करता है। जैसे शिकार, युद्ध, सामूहिक नृत्य, दौड़, अश्वारोही, गजारोही मानव तथा मैथुनरत नर-नारियों की चित्रावली प्रदर्शित है। गोरीदांत पर्वत के साथ जुड़े अन्य पर्वतीय भाग जैसे रामगढ़, रिछा, परेवा पर्वत एवं मुंडी टोरिया आदि में भी सैकड़ों शिलाचित्र देखे जा सकते हैं।

वर्तमान पुरातत्वेत्ताओं का मत है कि यह चित्र कई हजार वर्ष प्राचीन वनवासी मानवों द्वारा बनाये गये थे। इस क्षेत्र के संदर्भ में सर्वाधिक कार्य करने वाले सागर-रहली मार्ग पर स्थित बरौदा (गीतापुर) नामक गांव के केसरी आर्य थे, जिन्होंने स्वयं के अथक परिश्रम से एक विशाल संग्रहालय का निर्माण किया एवं सैकड़ों

प्राचीन मूर्तियों आदि मानवों के पत्थरों से निर्मित घरेलू उपकरणों को सम्हाल कर रखा है जो सम्पूर्ण रानगिर क्षेत्र में स्थित ऐतिहासिक तथ्यों पर भरपूर प्रकाश डालते हैं।

सन्दर्भ -

1. सागर गजेटियर- व.सु. कृष्णन, जिला गजेटियर विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, 1970, पृ. 525
2. सागर विरासत और विकास, पी. राघवन, शारदा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1992, पृ. 45
3. राय बहादुर हीरालाल, अलम्य ग्रंथमाला, इन्स्टैक, जबलपुर, 1988
4. रहली तहसील का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य, डॉ. श्याम मनोहर पचौरी, भोपाल, 2008, पृ. 62
5. छत्र प्रकाश, लाल कवि
6. रहली तहसील, डॉ. पचौरी, पूर्वोक्त, पृ. 62
7. प्राचीन भारत का इतिहास, बाजपेयी, के.डी. एवं पाण्डे विमलचंद
8. पूर्वोक्त डॉ. पचौरी, पृ. 63

